ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

शिक्षण के पहिए : शिक्षण प्रतिमान

Teaching Wheels: Teaching Paradigms

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

राजेन्द्र कुमार यादव
प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
ग्राम्यांचल पी.जी. कॉलेज
हैदरगढ़, बाराबंकी,
उ.प्र., भारत

सारांश

सीखने सिखाने की व्यवस्थाओं को उन्नतशील, रोचक व बोधगम्य बनाने के लिए अनेकानेक युक्तियों व उपायों का प्रयोग किया जाता रहा है। इन्ही उपायों में से एक उपाय शिक्षण प्रतिमान या टीचिंग मॉडल है। इन शिक्षण प्रतिमानों के सहारे हम शिक्षण को बोधगम्य बनाते है, साथ ही शिक्षण को रोचक बनाते हैं। प्रभावी शिक्षण के द्वारा वास्तविक सृजन हो जाता है। महान शिक्षाशास्त्री H C Wyld कहते है कि '' किसी आदर्श के अनुरूप व्यवहार को ढालने की प्रक्रिया को शिक्षण मॉडल माना जाता है।''

महान दार्शनिक महात्मा गांधी अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि मेरे जीवन पर राजा हरिश्चन्द्र नाटक का प्रभाव रहा है। एक आदर्श जो मुझे पूरे जीवन प्रभावित करता रहा है। मेरे लिए बेहतर सीख साबित हुई। महान दार्शनिक सुकरात ने प्रश्नों के द्वारा शिक्षण को गति प्रदान करने की बात बताई है। अर्थात प्रश्नों को टीचिंग मॉडल के रूप में व्यवस्थित करने की बात बताई है। रिचर्ड सचमैन ने पूछताँछ मॉडल प्रतिपादित करके शिक्षण प्रतिमान की उपयोगिता शिक्षा के पहिये के रूप में की है। जो शिक्षण में गति के साथ चेतना लाने का कार्य करता है।

Numerous tips and measures have been used to make the teaching and learning systems advanced, interesting and understandable. One of these measures is the teaching model or teaching model. With the help of these learning patterns, we make learning comprehensible, while also making learning interesting. Real creation is created through effective teaching. The great pedagogue, Blesch, states that "The process of adapting behavior to an ideal is considered a teaching model."

The great philosopher Mahatma Gandhi describes his experience and says that the drama of King Harishchandra has been influenced by my life. An ideal that has influenced me all my life. Proved to be a better learning for me. Socrates, the great philosopher, has given the question to give impetus to teaching. That is to say, to organize the questions as a teaching model. Richard Sachman has used the teaching paradigm as a wheel of education by presenting a model of inquiry. Which works to bring consciousness with speed in learning.

मुख्य शब्द : बोधगम्य, दृश्य, अर्न्तनिहित, तार्किक, बहुआयमी, दृष्टान्त, तब्दील, विस्मृत, आत्मानूभूति, परिपृच्छा, चेतनाशील, गतिशीलता, अंतस्त, ऐतिहासिक, निहित, सद्मार्ग, आदर्श।

Perceptive, Visual, Implicit, Logical, Multidimensional, Parable, Transformed, Obliterated, Self-Realization, Parochial, Conscious, Dynamic, Embodied, Historical, Implicit, Shocking, Ideal.

प्रस्तावना

शिक्षण प्रतिमान या शिक्षण मॉडल एक ऐसा शब्द है जो सीखने सिखाने की क्रिया को चेतनाशील कर देता है। सामान्यतः शिक्षण प्रतिमान का नाम आते ही शिक्षण के विचारों की रूपरेखा मस्तिष्क में चित्रित हो जाती है। शिक्षण प्रतिमान या टीचिंग मॉडल शिक्षण को सरल व बोधगम्य बनाने का एक तरीका है। किसी वस्तु के बारे में या मौलक विचारों को केवल शिक्षण के द्वारा सिखाने या समझाने में कठिनाईयां आती हैं। इन कठिनाईयों को दूर करने में शिक्षण प्रतिमान अहम है। इन शिक्ष्ण प्रतिमानों को उदाहरण, कल्पना, दृश्य उपकरण, अभिनय आदि कई रूपों में व्यक्त किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रायः सभी विचार उद्देश्य युक्त होते हैं। इस शोध अध्ययन के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं। जिनका विवरण निम्नवत है–

1. शिक्षण प्रतिमानों की शिक्षण में भूमिका का अध्ययन करना।
2. शिक्षण प्रतिमानों की उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. शिक्षण प्रतिमानों का शिक्षण में शिक्षण सहायक अंग के रूप में अध्ययन करना।
4. शिक्षण प्रतिमानों का शिक्षण में महत्व का अध्ययन करना।
5. शिक्षण प्रतिमानों के द्वारा आदर्श के अनुरूप व्यवहार में महत्ता का अध्ययन करना।
6. शिक्षण प्रतिमानों के द्वारा बोधगम्यता का अध्ययन करना।
7. शिक्षण प्रतिमानों के द्वारा रोचकता एवं सरलता का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

टीचिंग मॉडल शिक्षण में वही भूमिका निभाते हैं जैसे सूख रहे पौधे को पानी मिल जाना है। शिक्षण प्रतिमान या मॉडल का वही स्थान है, जो भोजन में नमक का। जैसे नमक विहीन खाना स्वादहीन हो जाता है। वैसे ही प्रतिमान विहीन शिक्षण उद्देश्य हीन हो जाता है। यदि समुचित व्यवस्था में हम टीचिंग मॉडल का उपयोग करते हैं। तो निश्चित ही हम अपने शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करेंगे। जिससे समाज निरंतर उन्नतिशील होगा।

यदि हम शिक्षार्थियों के विचारों का अध्ययन गहनता से करेंगे तो उपरोक्त बातों का प्रभाव मिलेगा। शिक्षाशस्त्री H C Wyld कहते है कि '' प्रतिमान किसी आदर्श के अनुरूप व्यवहार को ढालने की प्रक्रिया को कहा जाता है।''कूम्ब (Coombs) का मानना है कि **A model at the world which is tested by comparing is consesquences of the observed data.''

शिक्षण प्रतिमान, शिक्षण सिद्वांत विकसित करने की ओर पहला कदम है। यह शिक्षण सिद्धांतो को वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। शिक्षण प्रतिमान स्वयं सिद्ध कल्पनायें होती हैं। जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली एवं बोधगम्य बनाने के लिए करता है। शिक्षाशास्त्री ''हीमैन'' बताते हैं कि शिक्षण प्रतिमान शिक्षण के बारे में सोचने विचार करने की एक रीति है। जो वस्तु के अर्न्तनिहित गुणों को परखने के लिए आधार प्रदान करती है। प्रतिमान किसी वस्तु को विभाजित तथा व्यवस्थित करके तार्किक रूप में प्रदान करने की विधि है।

भटनागर (1973) कहते है कि शिक्षण प्रतिमान शिक्षण सिद्धांतों के प्रतिरूप प्रकार भी कहे जाते हैं। क्योंकि ये शिक्षण सिद्धांत निर्माण करने के लिए आवश्यक तत्वों तथा प्रत्यय प्रदान करते हैं। जिनका प्रयोग कर शिक्षक अपने शिक्षण को गुणवत्ता परक बनाता है। शिक्षण प्रतिमान या टीचिंग मॉडल बहुआयामी या बहु प्रकार के हो सकते हैं। जो व्यैक्तिक विकास से लेकर सामाजिक, आर्थिक व बहुउपयोगी साबित हो सकता है। जिससे सामाजिक व राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान हो सकती है।

महान शिक्षाशास्त्री, राजनैतिक हस्ती, शांतिदूत, जनसेवक महात्मा गांधी लिखते है कि मेरे जीवन पर सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र व श्रवण कुमार के नाटकों का सबसे अधिक प्रभाव रहा। बचपन में देखे गये नाटक मेरे मानस पटल पर आजीवन बने रहे। जिससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। उपयुक्त दृष्टांत को गहनता से अध्ययन करे तो हमें पता चलेगा कि लघु नाटकों के प्रतिमान ने एक साधरण बालक को सद्मार्ग दिखाने की भूमिक निभाई। इन नाटक प्रतिमानों ने चेतनाशील मन को सक्रियता प्रदान कर एक विशेष उपलब्धि में तब्दील किया। इन छोटे छोटे प्रतिमानिक शिक्षण ने एक बाल मन को सक्रिय बनाकर समाज ही नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व को रोशन करने की भूमिका अदा की है। शिक्षण को यदि शरीर मान लिया जाय तो प्रतिमान को आत्मा बनाना पड़ेगा। यदि आत्मा प्रतिरूप बन जायेगी तो शरीर की मन में एकाग्रता बनी रहेगी। यही एक वाह्य अंतस्त तत्व है जो शिक्षण प्रक्रिया को सोद्देश्य मूर्तिरूप बना पायेगी।

महान दार्शनिक सुकरात ने प्रश्न पूछने की प्रणाली विकसित की है। वो प्रश्नों के द्वारा ज्ञान देने की बात करते हैं। उनके प्रतिमान को सुकराती शिक्षण प्रतिमान या ऐतिहासिक शिक्षण प्रतिमान का गया है। सुकरात लिखते हैं कि बालक के अन्दर ज्ञान पहले से ही निहित है, पूर्ण है। लेकिन जन्म की कठिन प्रक्रिया में वह भूल जाता है। इस भूले हुए ज्ञान की याद दिलाना ही शिक्षा कहलाता है। इस विस्मृत ज्ञान को पुनः स्मरण कराने के लिए प्रश्न पूछने के लिए कहा है। अर्थात हम शिक्षण में प्रश्नगत प्रतिमान का प्रयोग करेंगे। प्रायः हम देखते है कि जब बालक या मनुष्य से प्रश्न पूछते हैं तो सीखने व सिखाने वाले व्यक्तियों की सक्रियता बढ़ती है। परिणाम स्वरूप शिक्षण प्रक्रिया में स्थायित्व बढ़ जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा सीखा गया ज्ञान स्थायी व उपयोगी होता है।

अमेरिकन दार्शनिकों ने व्यैक्तिक विकास प्रतिमान को विकसित किया है। इस प्रतिमान की मान्यता है कि यह प्रतिमान व्यक्तिगत विकास के लिए उपयोगी है। इस प्रतिमान के द्वारा आत्मानुभूति (Self Esteem) पर विशेष बल दिया जाता है। इस प्रतिमान में भी यही बताया गया है कि कोई उद्देश्य परक टीचिंग मॉडल को हम व्यैक्तिक भावनाओं में शामिल करेंगे और उसी विषय पर हम आत्मानुभूति करेंगे।

रिचर्ड सचमैन ने परिपृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान (Enquiry Training Model) परिभाषित किया है। इसमें भी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत समताओं के विकास की बात कही गई है। प्रश्न पूछना, सूचनाएं इकट्ठा करना आदि कार्य शिक्षक–शिक्षार्थी मिल कर करते हैं। जिसमें शिक्षण बोधगम्य होता है और शिक्षण सक्रियता बनी रहती है।

निष्कर्ष

अब हम देखते है कि प्राचीन विचार धारा से लेकर आधुनिक विचारधारा तक शिक्षण प्रतिमानों के प्रयोग पर बल दिया गया है। टीचिंग मॉडल के द्वारा व्यैक्तिक विकास को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया जा सकता है। हम यह भी देखते हैं कि टीचिंग मॉडल शिक्षण प्रक्रिया को गतिशीलता प्रदान करते हैं। साथ ही साथ बोधगम्यता का स्तर भी उच्च हो ता है। शिक्षण प्रतिमानों के द्वारा बाल मष्तिस्क को एक आदर्श बनाया जा सकता है। हम देखते है किं प्रतिमान आधारित शिक्षण व्यवस्था में

सुरूचिपूर्ण आदर्श शिक्षण संचालित होता है। सम्यक रूप में देखें तो हम पाते हैं कि शिक्षण प्रतिमान शिक्षण को गति देने वाले पहिए हैं। जिन पर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया गतिमान रहती है। शिक्षण प्रतिमान मस्तिष्क को क्रियान्वित चेतनाशीलता प्रदान करते हैं। जो व्यैक्तिक विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस कड़ी पर सम्पूर्ण विश्व की आधारशिला संरक्षित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शैक्षक तकनीकी के मूल आधार।*
डा. एस.पी. कुलश्रेष्ठ व डा. सरोज यादव
2. *सत्य के मेरे प्रयोग।*
एम. के. गांधी
3. *शिक्षण तकनीकी।*
लक्ष्मी भार्गव
4. *शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर अनुदेशन*
जे0सी0 अग्रवाल, एस0पी0 कुलश्रेष्ठ
5. *शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना संप्रेषण तकनीकी*
जे0सी0 अग्रवाल, कुलश्रेष्ठ
6. *शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवित्तियां*
भाई योगेन्द्रजीत